भाषा । साहित्य । संस्कृति

प्रश्नचिह्न

उफ्फ! अपना सच
खेतों से घिरे उदास गाँव में
लोगों से अधिक हैं
अनथक खड़े दरख़्त।
अधिक हैं गुमसुम पशु-पक्षी।
अपनी दुश्वारियाँ गिनाने
नहीं है शब्दकोश उनके पास।

~ धर्मपाल महेंद्र जैन

वर्ष : 02 | अंक : 24 | मार्च 2026

9 789360 123260

आवरण : तन्वी मंडलोई

संपादक : आलोक रंजन

भाषा । साहित्य । संस्कृति

प्रश्नचिह्न

मार्च 2026 । चौबीसवाँ अंक

प्रबंध सम्पादकः
राहुल राज

प्रबंध सहयोगः
सौरव कुमार भारती

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरणः तन्वी मंडलोई
रेखांकनः श्वेता कुमारी

अक्षर संयोजन
खुशी

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाईट: https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

अनुक्रम

सम्पादकीय

कविताएँ

धर्मपाल महेंद्र जैन, डॉ. रंजना शर्मा, पवन कुमार “मारुत”
राधेश्याम तिवारी, मनोज चौहान

कहानियाँ

हरिंदर राणावत
डॉ. संदीप नारद

व्यंग्य

रूपलाल बेदिया

समीक्षा

सुमन कुमार

संस्मरण

डॉ. पीतांबरी

विकास की कीमत या हमारी सामूहिक विफलता?

संपादकीय

साहित्य और प्रकृति का संबंध उतना ही प्राचीन है जितना मानव सभ्यता का इतिहास। मनुष्य ने जब पहली बार प्रकृति को देखा, उसकी सुंदरता, भय, करुणा और उदारता को महसूस किया, तभी से साहित्य का जन्म हुआ। भारतीय साहित्य में नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि जीवन की धारा है - वृक्ष केवल लकड़ी नहीं, बल्कि आश्रय, संस्कृति और स्मृति के प्रतीक हैं- पर्वत केवल भू-आकृतियाँ नहीं, बल्कि धैर्य और स्थिरता के रूपक हैं। ऋग्वेद के सूक्तों से लेकर उपनिषदों, रामायण, महाभारत, कालिदास, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक हिंदी साहित्य तक प्रकृति जीवन के केंद्र में रही है। इसलिए पर्यावरण का प्रश्न केवल विज्ञान का विषय नहीं, बल्कि साहित्य, संस्कृति और मानवीय संवेदना का भी प्रश्न है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों ने प्रकृति और मनुष्य के संबंध को अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है। सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति जीवन की सहचरी बनकर उपस्थित होती है। महादेवी वर्मा के यहाँ प्रकृति करुणा, आत्मीयता और मौन संवाद का माध्यम है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने प्रकृति को राष्ट्र और संस्कृति की शक्ति से जोड़ा, जबकि अज्ञेय ने आधुनिक मनुष्य और प्रकृति के बीच बढ़ती दूरी को गहराई से महसूस किया। इन रचनाकारों का साहित्य हमें यह सिखाता है कि प्रकृति पर किया गया प्रत्येक आघात अंततः मनुष्य के अस्तित्व पर ही आघात है।

आज की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिन नदियों ने सभ्यताओं को जन्म दिया, वही नदियाँ आज अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं। जिन वृक्षों ने हमें शुद्ध वायु, वर्षा और जीवन दिया, उन्हें विकास के नाम पर काटा जा रहा है। जिन तालाबों और झीलों ने सदियों तक जल का संरक्षण किया, वे अतिक्रमण और प्रदूषण की भेंट चढ़ चुके हैं। महानगरों की ऊँची इमारतें और चौड़ी सड़कें विकास का प्रतीक अवश्य हैं, परंतु यदि उन्हीं शहरों में लोग पीने के पानी के लिए संघर्ष करें, तो यह विकास अधूरा और असंतुलित प्रतीत होता है।